315hi31A

31

मध्यकालीन राज्य

इस अध्ययन–सामग्री में मध्यकालीन भारत में शामिल राज्यों के उदय, स्वरूप और विस्तार पर चर्चा की गई है। यहाँ दो मुख्य राज्य–संरचनाओं, दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य पर चर्चा की गई है। मध्यकालीन शासक मूलतः भारत मे बाहर से आए, इसलिए उन्हें देशी राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित भी करना था और उनसे सीखना भी था। मध्यकालीन राज्य का वर्णन एक ऐसे राज्यतंत्र के रूप में किया जा सकता है, जिसका मुखिया सशक्त शासक था, जिसे पदानुक्रमानुसार संगठित प्रशासनिक तंत्र का समर्थन प्राप्त था और धर्म की सत्ता द्वारा वैधता प्रदान की गई थी। सेना, कुलीन नौकरशाही और भूमि–राजस्व राज्य के मूल तत्त्व बने रहो। लेकिन हर शासक के लिए सत्ता में हिस्सा चाहने वाले एक दूसरे गुटों के बीच संतुलन बिठाना जरूरी था।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- मध्यकालीन भारत में राज्य के विकास का विश्लेषण कर सकेंगे;
- मध्यकालीन राज्य के स्वरूप का स्मरण कर सकेंगे; और
- मध्यकालीन राज्य की संस्थाओं का वर्णन कर सकेंगे।

31.1 पृष्ठभूमि

गुप्त राज्य के पतन के बाद भारतीय राज्यतंत्र ने विकेंद्रीकरण और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों का उदय देखा प्रारंभिक युग से मध्यकालीन युग में परिवर्तन के दौरान तीन क्षेत्रीय सत्ताओं – बंगाल के पालों, उत्तर भारत के प्रतिहारों और प्रायद्वीपीय भारत के राष्ट्रकूटों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष देखने को मिला। जल्दी ही उत्तर भारत में साम्राज्य बनने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाले छोटे राजपूत राज्यों का विकास हुआ। किंतु उत्तर–पश्चिम दिशा से तुर्कों के आगमन से एक विस्त त मध्यकालीन राज्य के उदय की नई प्रक्रिया दिखाई दी।

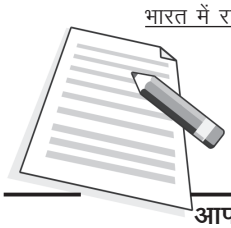

आपकी टिप्पणियाँ

31.2 दिल्ली सल्तनत

इल्बरी तुर्क

तेरहावीं शताब्दी में उत्तर भारत में एक नए प्रकार के राजवंशीय प्रभाव क्षेत्र का उदय हुआ। दिल्ली सल्तनत की उत्पत्ति मुहम्मद गोरी की विजय से हुई है, जिसने 1151 में गजनी को निकाला और फिर 1157 में गजनवियों को पंजाब से खदेड़ दिया। 1186 में गजनवियों को उखाड़ फेंकने के लिए मुहम्मद गोरी ने सिंधु घाटी में कूच किया। मार्ग में उसकी सेनाओं ने मुलतान (1175), सिंध (1182), पेशावर और लाहौर (1186) को जीता। 1190 में उसने भटिंडा पर अधिकार किया जो राजपूत राजा प थ्वीराज चौहान के साथ युद्धों की वजह बन गया, जिसे उसने अंततः 1192 में हरा दिया। गंगा घाटी के पश्चिमी मार्गों से राजपूतों के आधिपत्य को समाप्त कर गोरी की सेनाएं पूर्व की ओर तब तक बढ़ती रहीं, जब तक कि बख्तयार खिलजी ने अंततः 1200 में बंगाल में लक्ष्मणसेन को नहीं हरा दिया। मुहम्मद गोरी की 1206 में म त्यु हो गई। तब उसके विश्वासपात्र मामलुक (पूर्व दास) सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने, जो कि दिल्ली का सेनापति था, अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित कर दी। इल्बरी तुर्कों का राजवंश उस कड़ी में पहला था, जो सामूहिक रूप से दिल्ली सल्तनत के रूप में जानी गई। बाद में गोरी और गजनवी के दिल्ली को वापस अपने अधिकार–क्षेत्र में लाने के प्रयासों को अंततः दिल्ली के सुल्तान इल्तुतमिश ने 1211–1236 में असफल कर दिए। इल्तुतमिश को उत्तर भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेता माना जाना चाहिए। उसने नई राजधानी दिल्ली को राजतंत्रीय किस्म की सरकार और शासक वर्ग प्रदान किए। उसने अनुदान के वेतन के बदले भूमि से राजस्व देने की प्रथा शुरू की। उसने एक केंद्रीय सेना रखी और टंका (चांदी) तथा जीतल (तांबा) के सिक्के चलाए। प्रसिद्ध कुतुब मीनार उसी के शासन–काल में पूरी हुई। इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया (रजियाउद्दीन) को अपनी उत्तराधिकारिणी के रूप में नामांकित किया। इसके बावजूद नए राज्य में इल्तुतमिश की म त्यु के बाद के दस वर्षों में गंभीर दलीय विवाद होने के कई कारण थे जिनके चलते उसके चार बच्चे या बच्चों के बच्चे बारी–बारी से गद्दी पर बिठाए और उतार दिए गए। यह मुख्यतः इल्तुतमिश के निजी दासों के प्रयासों से कायम रहा, जो चालीस (चहलगान) के नाम से जाना गया। यह एक राजनीतिक दल था, जिसकी सदस्यता प्रतिभा और इल्तुतमिश के परिवार के प्रति निष्ठा से मिलती थी। 1246 में राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया, जब चालीस के एक कनिष्ठ सदस्य गयासुद्दीन बलबन ने नवीनतम सुल्तान नसीरुद्दीन महमूद (शासन–काल 1246–66) के प्रशासन के भीतर मजबूत हैसियत हासिल कर ली। पहले सुल्तान का नायब (सहायक) और बाद में खुद सुल्तान (शासन–काल 1266–87) रहा बलबन अपने समय की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक हस्ती था। बलबन ने 'खुदा की परछाई' (जिल्ल–अल–अल्लाह) के रूप में सुल्तान की विशेष स्थिति पर जोर दिया। बलबन ने दरबारी शान, मर्यादा और शिष्टाचार पर बल दिया। वह राजपुरुषों तक को ऐसे गंभीर दंड देने में यकीन रखता था, जो उदाहरण बन सकें। किंतु बलबन के आसन्न उत्तराधिकारी न तो प्रशासन संभालने में सक्षम थे, न पुराने तुर्की राजपुरुषों और खिलजियों के नेत त्व वाली नई ताकतों के बीच अंतर्दलीय संघर्षों को टालने में। दोनों गुटों के बीच हुए एक संघर्ष के बाद 1290 में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने सल्तनत हासिल की।

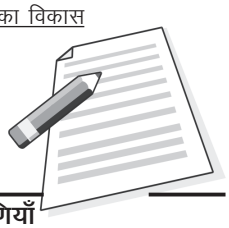

खिलजी

खिलजियों को पुराने राजपुरुषों द्वारा शुद्ध तुर्की कुल से आया हुआ नहीं माना जाता था (हालांकि थे वे तुर्क ही), और उनकी सत्ता–प्राप्ति के लिए उतावले बाहरी व्यक्ति मददगार रहो, जिनमें से कुछ भारत में जन्मे मुसलमान थे, जो बलबन और चहलगान के अनुयायियों की पकड़ ढीली होने पर अपनी हैसियत बढ़ने की उम्मीद कर सकते थे। कुछ हद तक तब खिलजियों की सत्ता पर पकड़ बदलते सत्ता–संतुलन की ओर एक कदम था, जो दिल्ली सल्तनत के बाहर, मध्य एशिया और ईरान में, चलने वाली गतिविधियों और उत्तर भारत में तुर्की शासन की स्थापना के बाद हुए बदलावों, दोनों का नतीजा माना जाता था। खिलजियों के तहत विजयों की बाह्य नीति और पूर्ण नियंत्रण की आंतरिक पद्धतियों का पालन सैनिक अभियानों और नियंत्रणों के जरिये किया जाता था। खिलजियों ने अपने अफगान–आक्रमण का इस्तेमाल उन असंतुष्ट राजपुरुषों की निष्ठा जीतने के लिए किया, जो यह महसूस करते थे कि पिछले सुल्तानों ने उनकी उपेक्षा की थी। जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296) ने बलबन के शासन–काल के कुछ कठोर पहलुओं को हलका करने की कोशिश की। वह पहला शासक था, जिसने यह राय जाहिर की कि शासक शासितों के तत्पर समर्थन पर आधारित होना चाहिए और चूंकि हिंदुस्तानियों में बहुमत हिंदुओं का है, इसलिए शासन वास्तव में पूर्ण इस्लामी नहीं हो सकता।

1296 में उसके महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। अलाउद्दीन खिलजी के शासन–काल (1296–1316) में सल्तनत ने संक्षेप में साम्राज्य का स्वरूप ग्रहण कर लिया। केंद्रीकरण और विस्तार के अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए अलाउद्दीन को धन, निष्ठावान और पर्याप्त आज्ञाकारी अमीरवर्ग तथा अपने निजी नियंत्रण के अधीन एक दक्ष सेना की दरकार थी। उसने इससे पूर्व 1292 में धन की समस्या आंशिक रूप से सुलझाई थी जब उसने मध्य भारत में भेलसा में धावा बोला था। अपनी स्थिति सुद ढ़ करने और नई सेना गठित करने में उस सफलता का उपयोग करने के लिए उसने 1296 के शुरू में दक्षिण में यादवों की आश्चर्यजनक रूप से सम द्ध राजधानी देवगिरि (आधुनिक दौलताबाद) पर आक्रामक किंतु अनधिक त धावा बोला। देवगिरि की दौलत ने न केवल उसके इस बलात अपहरण के लिए धन जुटाया, बल्कि उसके राज्य–निर्माण की योजनाओं के लिए अच्छा आधार भी प्रदान किया। केंद्रीकरण और भारी क षि–कर अलाउद्दीन के शासन की मुख्य विशेषताएं थीं। क षि–कर उगाहने की मात्रा और क्रियाविधि ने सुल्तान को दो उद्देश्य हासिल करने में सहयता की : 1. अनाज–वाहकों को कम कीमतों पर आपूर्ति सुनिश्चित करना, और 2. राज्य के अनाज के गोदामों को सुरक्षित भंडारों से भरना, जो उसके प्रसिद्ध कीमत–नियंत्रणों से जुड़कर एक विशाल स्थायी सेना रखने की नाजुक वित्तीय समस्या के समाधान के रूप में सामने आया। अलाउद्दीन की म त्यु (1316) के बाद पांच वर्षों के भीतर खिलजियों ने अपनी सत्ता खो दी। उत्तराधिकार के विवाद के परिणामस्वरूप महल के रक्षकों ने मलिक काफूर की हत्या कर दी और सुल्तान के तीसरे बेटे कुतुबुद्दीन मुबारक शाह ने अलाउद्दीन के छह–वर्षीय बेटे को अंधा कर सल्तनत हासिल कर ली (1316–20)। वह अपने पसंदीदा सेनापति हिंदू धर्मांतरित खुसरो खान के हाथों मारा गया। खुसरो के शासन का विरोध तुरंत शुरू हो गया, जिसकी अगुवाई देवपालपुर में

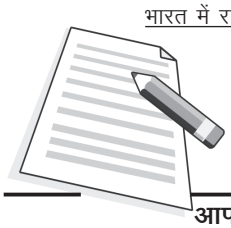

आपकी टिप्पणियाँ

पश्चिमी अभियानों के प्रमुख गाजी मलिक ने की। खुसरो हार गया और चार महीने बाद उसकी हत्या कर दी गई।

तुगलक

गयासुद्दीन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठनेवाले गाजी मलिक (शासन–काल 1320–25) ने ताजपोशी से पहले मंगोलों के खिलाफ सीमाओं की सफलतापूर्वक रक्षा करने के लिए प्रसिद्धि पाई थी। तुगलक भी संपूर्ण भारत पर शासन करने की इच्छा रखते थे। गयासुद्दीन (1320–25) की वारंगल, उड़ीसा और बंगाल की मुहिम इसी उद्देश्य को लेकर थी। उसने दिल्ली के निकट तुगलकाबाद शहर का निर्माण कराया। बंगाल की मुहिम से लौटते हुए सुल्तान की हत्या कर दी गई, जब दिल्ली के निकट अफगानपुर में उस पर लकड़ी का एक मंडप गिर पड़ा। मुहम्मद बिन तुगलक के शासन (1325–51) को सल्तनत के उत्थान और पतन दोनों के रूप में अंकित किया गया। 1296 से 1335 तक का समय लगभग सतत केंद्रीकरण और विस्तार के दौर के रूप में देखा जा सकता है। दिल्ली पर फिरोजशाह तुगलक के शासन–काल के इतिहास में समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी कहता है कि 'इतिहास वर्ष क्रम के अनुसार घटनाओं के विवरण अर्थात् पैगंबरों, खलीफाओं, सुल्तानों और धर्म तथा सरकार के महान लोगों के ऐतिहासिक अभिलेखों और परंपराओं का ज्ञान है।' तुगलक वंश तैमूर के हमले के बाद जल्दी ही समाप्त हो गया, लेकिन सल्तनत बची रही, हालांकि वह केवल पुरानी सल्तनत की छाया ही रही। तैमूर के प्रतिनिधि ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और वह नया सुल्तान घोषित कर दिया गया, जो पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के प्रारंभिक वर्षों तक (1414–1451) शासन करने वाले सैयद वंश का पहला शासक था। उसका शासन अल्पकालिक था और दिल्ली के आसपास लगभग 200 मील के घेरे में सीमित था। उसने तंत्र को चालू रखा, जब तक कि उनसे ज्यादा योग्य लोधी वंश ने उसे नहीं संभाल लिया। लोधी शुद्ध अफगान मूल के थे, जिन्होंने तुर्की कुलीनता पर ग्रहण लगा दिया।

पाठगत प्रश्न 31.1

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके पुनः लिखिएः

1. 1168 में गजनवियों को उखाड़ फेंकने के लिए मुहम्मद गोरी ने सिंधु घाटी में कूच किया।

2. मुहम्मद गोरी की सेनाओं ने 1157 में मुलतान, 1128 में सिंध और 1168 में पेशावर और लाहौर को जीता।

3. इल्तुतमिश को दक्षिण भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेता माना जाना चाहिए।

4. दो गुटों के बीच हुए संघर्ष के बाद 1209 में जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने सल्तनत हासिल की।

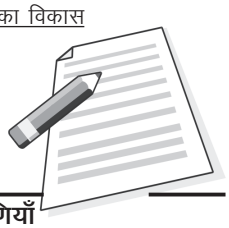

5. 1269 में जलालुद्दीन खिलजी के महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उसकी हत्या कर दी गई।

31.3 मुगल

1526 में मध्य एशिया से आए बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की। बाबर ने तैमूर और चंगेज खान दोनों से उत्तराधिकार प्राप्त किया। दिल्ली और गंगा घाटी की उसकी जीतें दक्षिण एशिया में सैनिक सत्ता के उभार के आखिरी कदम से पहले की थीं। दक्षिण एशिया में महानतम सुल्तान मुगल सम्राट थे, जिन्होंने (बाबर और तैमूर के जरिये तुर्कों से अलग होकर भी) फारसी शाही संस्क ति अपनाई और तुर्कों, अफगानों और अन्य समस्त सुल्तानों से खुद को प्रतीकात्मक रूप से ऊंचा उठाने के लिए *पादशाह* की फारसी पदवी ग्रहण की। बाबर चुगताई तुर्क था, जो उजबेक सेनाओं से बचने के लिए समरकंद के पास अपनी पुश्तैनी जमीनें छोड़कर भाग निकला था। उसने गंगा घाटी में अवसर पाया, जहाँ उसने विरोधियों को नष्ट करने के लिए उजबेक शैली में बंदूकों और तोपों से लैस रिसाले के साथ कसे हुए तेज घोड़े इस्तेमाल किए। 1526 में उसने पंजाब से बंगाल तक सुल्तानों पर विजय प्राप्त कर ली थी लेकिन विरोधी बचे रहो। तेरहा साल बाद एक अफगान सैनिक ने जो लोधियों और बाबर के लिए युद्ध लड़ चुका था, जौनपुर में अपनी फारसी तालीम का प्रदर्शन करने के लिए अपना नाम शेरशाह रख लिया था, बंगाल और बिहार में एक नए वंश की घोषणा की। शेरशाह की सेनाओं ने तब बाबर के बेटे हुमायूँ को हराकर वापस अफगानिस्तान खदेड़ दिया, जहाँ हुमायूँ ने निर्वासन में अपने बेटे अकबर को पाला। शेर शाह की म त्यु के बाद उसका सूर वंश नहीं बचा, हालांकि प्रशासनिक नवीनताएं और बंगाल से पंजाब तक ट्रंक रोड का निर्माण उसकी स्थायी उपलब्धियां रहीं। शेरशाह की म त्यु के शीघ्र बाद 1555 में हुमायूँ ने दिल्ली को जीत लिया। वहाँ दुर्घटना के कारण उसकी म त्यु हो गई। इसके बाद उसका तेरहा वर्षीय बेटा अकबर अपने संरक्षक बैरम खाँ की देखरेख में गद्दी पर बैठा। अकबर की ताजपोशी 1556 में हुई जब बैरम खाँ ने लाहौर, दिल्ली, आगरा और जौनपुर के फौजी किलों वाले शहर जीते। संरक्षक के पद से हटाकर मार दिए जाने से पहले बैरम खाँ ने मालवा और राजस्थान पर भी फतह हासिल की। अकबर ने पचास साल (1556–1605) राज किया। वह अंत तक जीत हासिल करता गया। उसकी सेनाओं ने आकार, धन–प्राप्ति, नेत त्व, प्रौद्योगिकी और सफलता में पहले की सारी सेनाओं को पीछे छोड़ दिया। उसकी म त्यु के समय उसका अधिकार–क्षेत्र काबुल, कश्मीर और पंजाब से गुजरात, बंगाल और असम तक फैल गया था और अभी भी दक्षिण में तथा चारों तरफ पहाड़ों में बढ़ता जा रहा था। उसकी दमक उसके बेटे जहाँगीर (1605–1627), पोते शाहजहाँ (1627–1658) और परपोते औरंगजेब (1658–1707) तक पहुंची, जिसकी म त्यु के बाद शाही राज्य समाप्त हुआ। हालांकि यह वंश 1858 तक कायम रहा, जब इसे अंग्रेजों द्वारा अपदस्थ कर दिया गया। अपनी चरम अवस्था में मुगल साम्राज्य का भारतीय इतिहास में अभूतपूर्व संसाधनों पर अधिकार था और वह लगभग पूरे उपमहाद्वीप तक फैला था। 1556 से 1707 के बीच अपनी आश्चर्यजनक धन–संपदा और वैभव के स्वर्णिम दौर में मुगल साम्राज्य पर्याप्त सक्षम और केंद्रीक त संगठन था, जिसमें कर्मचारी, धन और सूचना का एक व्यापक समूह मुगल सम्राट और उसके गुप्त अमीर वर्ग को समर्पित था।

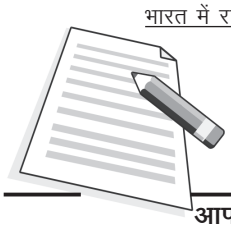

आपकी टिप्पणियाँ

इस अवधि के दौरान साम्राज्य के विस्तार का श्रेय बाहरी दुनिया के साथ भारत के बढ़ते वाणिज्यिक और सांस्क तिक संपर्क को जाता है। उपमहाद्वीप में सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियां यूरोपीय और गैर–यूरोपीय व्यापारिक संगठनों की स्थापना और विस्तार लेकर आई। मुख्य रूप से विदेश में मांग वाली वस्तुओं की प्राप्ति के लिए भारतीय इलाके घने स्थलमार्ग और तटीय व्यापारिक तंत्र के जरिये एक–दूसरे के नजदीक आए। कीमती धातुओं के आंतरिक आधिक्य ने इसे और बढ़ावा दिया। व्यापक विश्व के संग बढ़ते संबंध के साथ नई विचारधाराएं और प्रौद्योगिकियां भी आईं, जिन्होंने शाही प्रासाद को चुनौती दी भी और सम द्ध भी किया। किंतु साम्राज्य अपने–आप में एक विशुद्ध भारतीय ऐतिहासिक अनुभव था। मुगल संस्क ति ने फारसी–इस्लामी और स्थानीय भारतीय तत्त्वों का मेल कर उनका एक अलग किंतु रंग–बिरंगा जोड़ बना दिया। हालांकि अठारहावीं शताब्दी के प्रारंभ तक क्षेत्रों ने पुनः अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करनी शुरू कर दी थी, फिर भी मुगल–काल शाही केंद्रीय सत्ता बना रहा शाही केंद्र वस्तुतः मुगल साम्राज्य के पहले दो सौ वर्षों तक (1526–1748) उसके निर्देशो द्वारा नियंत्रित रहा और इस तरह वह भारतीय उपमहाद्वीप में पूर्व–आधुनिक राज्य–निर्माण की एक मोहक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

31.4 मध्यकालीन राज्य का स्वरूप

सुल्तान होने का क्या अर्थ था? कुरान में इस अरबी शब्द का अर्थ है 'आध्यात्मिक शक्तियों वाला व्यक्ति'। महमूद गजनी अपने समकालीनों द्वारा 'सुल्तान' कहा जाने वाला पहला व्यक्ति था, जो अपने प्रशंसको के बीच उसकी सफलता का सूचक है। यह पदवी पहले तुर्कों में लोकप्रिय प्रतीत होती है। पश्चिम और मध्य एशिया में सल्जूक वंश 'सुल्तान' की पदवी का आम तौर पर इस्तेमाल करने वाले पहले शासक थे, बाद में ओट्टोमन तुर्कों ने इसे यूरोप में प्रसिद्ध कर दिया। जब खलीफा यह पदवी प्रदान करने लगा, तो यह तेजी से मुस्लिम शासकों में लोकप्रिय हो गई और पूरी तरहा बदल गई। दिल्ली के सुल्तान बगदाद के खलीफा की प्रभुसत्ता स्वीकार करते थे और अपनी बादशाहत को दारुल इस्लाम का अंग समझते थे, जिसका न्यायिक प्रधान खलीफा था। मुगल सम्राटों के तहत भारत मुस्लिम कानून शरियत से शासित होता था। इसके बावजूद न तो दिल्ली के सुल्तानों के समय और न ही मुगल सम्राटों के दौरान राज्य ने पूर्णतः इस्लामी अध्यादेशों की पुष्टि की, क्योंकि उसे वास्तविकताओं के अनुरूप ढलना था और अक्सर वे सही नहीं भी होते थे। तुर्की और अफगान शासकों को हिंदुओं के साथ, जिनका जनसंख्या में व्यापक बहुमत था, सम्मान और सहनशीलता के साथ व्यवहार करना था। धर्म, संपत्ति और कई अन्य गैर–धार्मिक मामलों में गैर–मुस्लिम जनता को अपने मुकदमे अपनी खुद की सांप्रदायिक अदालतों में चलाने की अनुमति थी। सुल्तान के शासन–काल की भूमि–राजस्व प्रणाली और शाही दरबार में होने वाले समारोह और क्रियाविधियां भारतीय परंपरा का अटूट प्रमाण हैं। प्रश्न उठता है कि क्या मध्यकालीन भारतीय राज्य किसी धार्मिक वर्ग द्वारा शासित था? औपचारिक तौर पर मुस्लिम शासन के तहत मध्यकालीन राज्य निश्चित रूप से धर्मतंत्र था, क्योंकि उसमें इसके सारे अनिवार्य तत्त्व थे ––ईश्वर की प्रभुसत्ता और दैवी कानूनों के अनुसार ईश्वर के निर्देश द्वारा सरकार का संचालन। दिल्ली के सुल्तान खुद को खलीफा के प्रतिनिधि या सहायक समझते थे, जो कि ईश्वर का प्रतिनिधि था। शेरशाह और इस्लाम शाह ने खलीफा की पदवी धारण की और अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगल सम्राटों ने 'खुदा की परछाई' और 'धरती

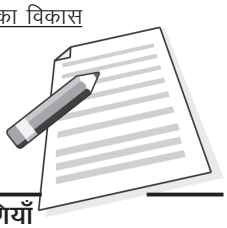

पर ईश्वर का प्रतिनिधि' जैसी पदवियां ग्रहण कीं। ईश्वर की प्रभुसत्ता असंदिग्ध थी। शरियत की सर्वोच्चता सदैव स्वीकार की जाती थी, हालांकि अकबर ने शरियत में राज्य के नियम जोड़ दिए थे। किंतु ये नियम मुस्लिम धर्मज्ञों को राज्य की नीतियां बनवाने की अनुमति नहीं देते थे।

मूलतः रक्षा, कानून और व्यवस्था तथा राजस्व का संग्रह दिल्ली सल्तनत की प्राथमिक चिंताएँ थीं। अन्य मामलो में वह आम तौर पर दखल न देने की नीति का पालन करती थी, क्योंकि जन–कल्याण सुल्तानों की प्राथमिक चिंता नहीं थी। सुल्तानों के शासन–काल में सहनशीलता अपवाद थी, नियम नहीं। इस प्रकार इस्लामी होने का दावा करने वाले दिल्ली सल्तनत के राज्य का चरित्र सैन्यवादी और कुलीन था। इसके विपरीत मुगल साम्राज्य एक बिलकुल अलग जमीन पर खड़ा था। सहनशीलता और दयालुता अकबर की सरकार के निर्देशक तत्त्व थे। अकबर अपनी जनता को अपनी संतान समझता था और इसलिए उसके कल्याण के लिए खुद को जिम्मेदार मानता था। अबुल फज़ल द्वारा परिकल्पित और अकबर द्वारा स्थापित राज्य किसी वर्ग–विशेष तक सीमित नहीं था और 'सबके साथ अमन' (सुल्हिकुल) के सिद्धांत पर आधारित था। लेकिन अकबर की प्रबुद्ध नीति और जहाँगीर तथा शाहजहाँ द्वारा परिस्थितिवश उसे जारी रखने के बावजूद मुगल शासन की कार्यप्रणाली में कम ही गुंजाइश थी। दान देने और उदार राजाओं के होने के बावजूद मुगल राज्य कल्याणकारी राज्य नहीं था। भूमि–राजस्व की वसूली और रक्षा उसके मुख्य कार्य थे। सरकार का स्वरूप राजतंत्रीय था, जो आनुवंशिक होने के बावजूद उत्तराधिकार की व्यवस्थित विधि विकसित नहीं कर पाया था। सिद्धांततः राजा सरकार की सभी शाखाओं का उद्‌भव था, पर शासक का कमजोर व्यक्तित्त्व अमीर वर्ग और उलेमाओं को शाही सता पर नियंत्रण का अवसर प्रदान कर सकता था।

पाठगत प्रश्न 31.2

रिक्त स्थान भरिए

1. बाबर ने _____ और _____ दोनों से उत्तराधिकार प्राप्त किया।
2. शेरशाह सूरी की म त्यु के बाद हुमायूँ ने _____ में दिल्ली पर विजय प्राप्त की।
3. 1556 से _____ के बीच अपनी आश्चर्यजनक धन–संपदा और गौरव के स्वर्णिम दौर में मुगल साम्राज्य एक _____ और _____ संगठन था।
4. _____ साम्राज्य के तहत भारत मुस्लिम कानून _____ द्वारा शासित था।

31.5 राजपद

चाहे उसकी जो भी पदवी है, राजा एक निजी महानता वाला व्यक्ति होता था, सेनानायक के रूप में ही नहीं, बल्कि तहत् आध्यात्मिक और नैतिक प्राणी के रूप में भी। सभ्य आदमी के रूप में उसके युद्ध उपयुक्त कार्य थे, हालांकि इसका क्या अर्थ अलग है जाता और बदल

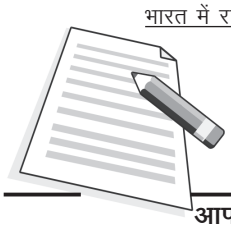

आपकी टिप्पणियाँ

जाता था। सुल्तान की महिमा उसके आसपास के लोगों के काम से उभरती थी। मुस्लिम राजाओं की महिमा की व्याख्या कवियों, विद्वानों (इमामों और उलेमाओं), वास्तुकारों, इतिहासकारों, जीवनी लेखकों, आध्यात्मिक मार्गदर्शकों (सूफियों) और हर क्षेत्र में अनिवार्य रूप से विद्यमान बड़ी सामूहिक मस्जिद जामा मस्जिद में जुमे की नमाज पढ़वाने वालों का काम था। सुल्तानों को महिमामंडित करने, सम्मानित होने के लिए कुशल सेवा दाताओं में होड़ लगी रहाती थी, जिसके परिणामस्वरूप सुल्तान का व्यक्तित्त्व प्रसंगानुसार उभरता था। उसके आसपास रहाने वाले विशेषज्ञ और सहायक उसकी राय, नीतियों और प्राथमिकताओं को आकार देते थे। सफलता पाने के लिए वह लोगों का पोषण करता था और उसकी ताकत उनकी ताकत पर निर्भर करती थी। इस तरहा राजा की ताकत की सामाजिक पहचान ताज से बहुत परे तक फैल गई थी। महमूद गजनी जैसे प्रारंभिक सुल्तान पूर्णतः अपने रिश्तेदारों और नजदीकी सजातीय सहायकों पर आश्रित थे। राजनीतिक परिदश्य के ज्यादा जटिल होने पर ज्यादा जटिल व्यक्तित्त्व विकसित हुए और मुगलों के शासन में व्यापक आयाम ग्रहण करते गए। सुल्तान का शरीर, बोलचाल, धार्मिक श्रद्धा, निजी आदतें, शौक, परिवार, गहस्थी, पुरखे, पत्नियां, पुत्र और ससुराल उसकी सार्वजनिक पहचान का आंतरिक अंग थे, जो सार्वजनिक गपशप, कला, जनश्रुति, गीतों और इतिवत्त में व्यक्त होते थे।

31.6 शाही दरबार

सुल्तान के सार्वजनिक व्यक्तित्त्व का दैनिक प्रदर्शन उसके आम दरबार में होता था, जहाँ वह मेहमानों, दूतों, फरियाद करने वालों, सहायकों और कर तथा उपहार देने वालों से मिलता था। दरबार की परंपरा समय के साथ विकसित हुई। इसका प्रारंभिक मध्य एशियाई मूल स्वरूप युद्ध के मैदान का शाही खेमा था, जिसने बाद की शताब्दियों में वास्तुशिल्पीय महिमा हासिल कर ली, जैसे कि फतेहपुर सीकरी, आगरा और दिल्ली जैसे किले वाले शहर जिनके दरबार में सम्राट की सत्ता के निष्पादन के लिए विशाल मंच हैं। अनेक दरबारों की प्रभावशाली सजावट में हिंदू और मुस्लिम परंपराएँ शामिल हैं। अठारहावीं शताब्दी के चित्रों में दरबार के द श्यों का विस्त त प्रस्तुतीकरण मिलता है, जिनके साथ अब मुगल सम्राट शाहजहाँ का इतिव त्त सत्रहवीं शताब्दी का पादशाहनामा भी है। इन चित्रों में लटकते कालीन दिखाए गए हैं, जो दरबार की भ्रमणशील परंपरा की याद दिलाते हैं। इन चित्रों में चित्रित हर व्यक्ति का दरबार में एक खास दरजा और सम्राट से संबंध था। सुल्तानों के संबंध में परिभाषित की जाने वाली समस्त व्यक्तिगत पहचानों के सार्वजनिक प्रदर्शन का स्थान दरबार बन गया था। अपने अधिकार क्षेत्र में शामिल सत्ता की समस्त विभिन्न हस्तियों के प्रदर्शन के लिए सुल्तान जहाँ जाता था, अपने दरबार को वहीं ले जाता था। दरबार सफर में काफी समय बिताता था खासकर युद्ध के समय। शासक का भ्रमणशील दरबार एक स्थायी सांस्क तिक विशेषता बन गया था, और बाद की शताब्दियों में भ्रमणशील प्रशासक, कर–संग्रहकर्ता और राजनेता कारगर ढंग से आधुनिक युग के भ्रमणशील सुल्तान बन गए।

31.7 राजा का व्यक्तित्त्व

सुल्तान के परिजन (सेवा में उपस्थित परिचारकों का समूह), राजचिह्न धारण करने वाला विशेष सुविधाभोगी वर्ग और राजा व उसका परिवार उसकी महानता के प्रतीक थे। सुल्तान सार्वजनिक शिष्टाचार और सीमित व्यवहार का पालन करते थे, ताकि अधीनस्थ

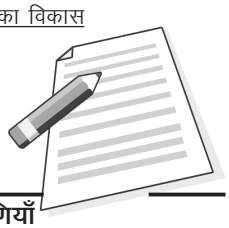

अपनी हद पार न करें। सुल्तान को लगातार अपना प्रभुत्व दर्शाने के लिए सबसे बड़ा, सबसे धनी, सर्वाधिक अलंक त, निरंकुश और शरीर पर मूल्यवान चीजें धारण किए रहाना होता था। विजयनगर के राय अपने शरीर को विदेश व्यापार से प्राप्त कीमती चीजों, खासकर इत्रों और चीनी पोर्सिलेन जैसी कीमती वस्तुओं से सजाकर खुद को 'पूर्वी' और 'पश्चिमी' महासागरों के स्वामी' कहते थे। सुल्तान का घर उसके शरीर का एक बड़ा रूप था, जो संचय, प्रभुत्व और नियंत्रण की ताकत दर्शाता था और धन–संपदा, मूल्य और रुचि को दर्शाता करता था। उस महान प्रभावशाली असरकारक सुल्तान की उपभोग की आडम्बरपूर्ण आदतें दक्षिण एशिया में राजनीतिक जीवन का स्थायी रूप बन गईं।

सुल्तान के व्यक्तित्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताएं सार्वजनिक तौर पर दिखाई देने वाले घरेलू प्रदर्शनों में, और सबसे बढ़कर शादी–ब्याहों में उभरती थीं। शादियां उनके राजनीतिक जीवन की बड़ी घटनाएँ होती थीं, क्योंकि शादी राजनीतिक गठजोड़ का सबसे सुरक्षित तरीका थीं। पादशाहनामा में युद्ध और शादियां कलाकारों द्वारा सबसे ज्यादा विस्तार से चित्रित किए गए हैं। यहाँ तक कि ऐसे में मुगल साम्राज्य भी एक पारिवारिक मामला जैसा बन जाता था। महल के अंदरूनी गुप्त क्षेत्रों में परिवार के सदस्य स्थितियों को प्रभावित करने में होड़ लगाए रहाते थे और गुप्त योजनाओं में शरीक रहाते थे, जो अक्सर अपने चरम बिंदु पर पहुंचकर उत्तराधिकार की लड़ाई में तब्दील हो जाती थीं, जिनमें रिश्तेदार एक–दूसरे को मार डालते थे, जैसा कि महभारत नामक महाकाव्य में देखने को मिलता है। घर में सुल्तान का सम्मान उसकी मां, पत्नियां, पुत्रियों और बहनों के निष्कलंक सद्‌गुणों पर निर्भर करता था। जनता की नजर से दूर महल की औरतें परदे के पीछे रहाती थीं और एकांत में रहाने वाली ये परदानशीं महिलाएं सुल्तान का सद्‌गुण बन गई थीं। औरतों के एकांतवास की प्रथा हिंदू और मुसलमान दोनों के विशिष्ट वर्गों में समान रूप से फैल गई थी, जो समाज के समस्त स्तरों पर सुल्तानों के लिए आदर्श बनते थे।

31.8 अभिजात वर्ग

सुल्तान विभिन्न पदवियों की खोज में रहाता था, जो व्यक्तिगत हैसियत बताने के अलावा नैतिक उद्‌गमों और सांस्क तिक संबंधों की सूचना देता है। हर सुल्तान अपने प्रति वफादारी रखनेवाले अभिजातों का एक दल बनाना और संगठित करना चाहता था। इसलिए न केवल तुर्क–ए–चहलगानी (चालीस अभिजातों का दल) ने समस्त विशेषाधिकारों और सत्ता पर कब्जा करने की कोशिश की, बल्कि सुल्तानों के प्रति व्यक्तिगत निष्ठा रखने वाले दलों, जैसे कुत्बीस (कुतुबुद्‌दीन ऐबक के प्रति निष्ठा रखने वाले), शम्सी (शम्सुद्‌दीन अल्तमश के प्रति निष्ठा रखने वाले), बल्बनी और अलाई अभिजात इस पूरी अवधि में प्रभावी बने रहो। तेरहावीं शताब्दी के प्रसिद्ध चालीस अमीरों सहित प्रायः सभी उच्च अभिजात मध्य एशिया मूल के थे, जिनमें से अनेक मध्य एशियाई बाजारों से खरीदे गए दास थे। यही बात तुर्की मामलुकों के केंद्र की अस्थिरता का कारण भी बनी। मंगोलों द्वारा मध्य एशिया और पूर्वी ईरान की लूटपाट के साथ इन क्षेत्रों के विशिष्ट राजनीतिक और धार्मिक वर्गों के और अधिक सदस्य उत्तर भारत में भेज दिए गए, जहाँ दिल्ली के सुल्तानों ने उन्हें सैनिक और प्रशासनिक संवर्गों के विभिन्न स्तरों पर प्रवेश दे दिया। अलाउद्‌दीन सल्तनत के भीतर राजनीतिक सहभागिता को जानबूझकर बढ़ाने वाले पहले शासकों में से एक था। उससे न केवल गैर–तुर्की मुस्लिम अमीरों के लिए, जिनमें से कुछ धर्मांतरित हिंदू भी थे, आंशिक रूप

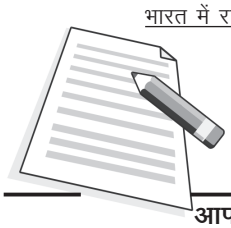

आपकी टिप्पणियाँ

से सत्ता के दरवाजे खोल दिए, बल्कि राजनीतिक दुनिया के भीतर इसे तर्कसंगत भी ठहराया। अलाउद्दीन और उसके बेटे दोनों ने महत्त्वपूर्ण हिंदू शासकों के परिवारों में शादी की और ऐसे अनेक शासकों को दरबार में प्रवेश दिया गया तथा उनका सम्मान किया गया। तुगलकों के शासन–काल में गैर–मुस्लिम भारतीय उच्च और अत्यंत उत्तरदायित्व पूर्ण पदों पर बिठाए गए, यहाँ तक कि उन्हें प्रांतों का हाकिम तक बनाया गया। मुहम्मद बिन तुगलक प्रशासन में हिंदुओं को शामिल करने की योजना बनाने वाला पहला मुस्लिम शासक था।

अकबर के शासन–काल के पहले तीन दशकों के भीतर उच्चतम श्रेणी के शाही लोगों ने बहुत ज्यादा विकास किया। चूंकि मध्य एशियाई अमीर राजसत्ता के साथ सत्ता की हिस्सेदारी करने की तुर्की–मंगोल परंपरा में पले – बढ़े थे—जो मुगल केंद्र को अपने खुद के इर्द–गिर्द संरचित करने की अकबर की महत्त्वाकांक्षा के अनुरूप व्यवस्था नहीं थी – अतः सम्राट का प्रमुख लक्ष्य उनकी ताकत और असर घटाना था। सम्राट ने नए मानदंडों को अपनी सेवा में आने के लिए प्रोत्साहित किया और ईरानी मुगल अभिजात वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण भाग बनने के लिए आ गए। अकबर ने भारतीय प ष्ठभूमि के नए लोगों की भी तलाश की। मुगलों के मुख्य विरोधी होने के कारण भारतीय अफगानों को बेशक दूर रखा गया पर बरहा के बुखारी सईदों और भारतीय मुस्लिमों में से कांबुओं की सैनिक और नागरिक पदों के लिए खास तौर से तरफदारी की गई। इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात थी मुगल अभिजात वर्ग में हिंदू राजपूत नेताओं की भर्ती। यहाँ भारतीय–इस्लामी इतिहास में पूर्णतः नया कदम नहीं था पर एक बड़ा कदम जरूर था, जिसने मुगल तानाशाही और स्थानीय निष्ठुर शासकों के बीच संबंधों के एक मानक प्रतिमान की शुरुआत की।

31.9 कार्यालय और पदानुक्रमिक संरचना

न तो दिल्ली सल्तनत की सरकार और न ही मुगल साम्राज्य की सरकार दास जैसी थी। दोनों सरकारें संगठित नौकरशाही थीं, जिनमें विभागों और अधिकारियों का नियमित श्रेणीकरण था। नागरिक या सैनिक कोई भी कार्यालय वंशानुगत नहीं था, इसलिए अधिकारी राजा द्वारा अपनी इच्छानुसार नियुक्त, स्थानांतरित और बर्खास्त किए जाते थे और वे केवल उसी के प्रति जवाबदेह थे। सल्तनत में सुलतान के ठीक बाद सरकार के सारे मामलों की देखभाल के लिए वजीर का दफ्तर था। मुगल अपने प्रधानमंत्री को वकील कहते थे, जो बाद में वजीर या दीवान का पर्यायवाची हो गया था। सुल्तानों ने दीवाने–अर्ज (सैनिक विभाग) की स्थापना की, जिसका प्रमुख अरीज–ए–मुमालिक होता था, जबकि मुगलों के शासन–काल में मीर बक्शी सेना और शाही प्रतिष्ठान के सामान्य प्रशासन का प्रभारी होता था। सल्तनत में धार्मिक और परोपकार के मामले दीवान–ए–रिसालत नामक विभाग देखता था, जिसका प्रधान सदर–उस–सुदूर (मुख्य सदर) होता था। जहाँ तक कार्यालय का ताल्लुक था, मुगलों ने उसका वही नाम जारी रखा। दोनों शासनों ने प्रधान काजी (मुख्य न्यायाधीश) और सदर के कार्यालयों को मिला दिया था। सल्तनत में मुशारिफ–ए–मामलिक (महालेखाकार), मुशौफी–ए–मामलिक (महालेखापरीक्षक), दबीरे–ए–खास की अध्यक्षता वाला दीवाने–ए–इंशा (राज्य का पत्राचार विभाग)

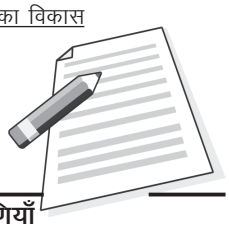

और बरीद–ए–मुमालिक (गुप्तचर विभाग का प्रधान) कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यालय और विभाग थे।

31.10 प्रांतीय प्रशासन

सल्तनत में मुक्ती या वली सूबों के प्रभारी थे। सूबों में आय और व्यय पर नियंत्रण रखने के लिए एक साहिबे–दीवान भी होता था, जिसकी सहयता मुशर्रिफ और कारकुन करते थे। तेरहावीं शताब्दी के अंत में प्रशासनिक प्रभाग के रूप में शिक का उदय हुआ जो बाद में सरकार के नाम से भी जाना गया। न्याय के लिए सूबों में काजी और सदर की अदालतें कार्यरत थी। मुगल साम्राज्य 15 सूबों में बँटा था—इलाहबाद, आगरा, अवध, अजमेर, अहमदाबाद, बिहार, बंगाल, दिल्ली, काबुल, लाहौर, मुल्तान, मालवा, खानदेश, बरार और अहमदनगर। कश्मीर और कंधार काबुल के जिले थे। सिंध, जिसे उस समय थट्टा कहा जाता था, मुल्तान सूबे का एक जिला था। उड़ीसा बंगाल का हिस्सा हुआ करता था। सूबे एक समान क्षेत्र या आमदनी वाले नहीं होते थे। हर सूबे में एक हाकिम, एक दीवान (राजस्व और वित्त अधिकारी), एक बख्शी (सैनिक कमांडर), एक सदर (धार्मिक प्रशासक), एक काजी (न्यायाधीश) और केंद्र सरकार को सूचना पहुंचाने वाले एजेंट होते थे। विभिन्न अधिकारियों के बीच (खासकर हाकिम और दीवान के बीच) शक्तियों का विभाजन शाही प्रशासन में एक महत्त्वपूर्ण कार्य–सिद्धांत था। मुगलकालीन सूबे जिलों (सरकारों) में भी बंटे थे। हर जिले में एक फौजदार (एक सैनिक अधिकारी जिसके कार्य मोटे तौर पर कलक्टर जैसे थे), एक काजी, एक बितिक्ची (प्रधान लिपिक) और एक खजानेदार (कोषपाल) होते थे। न्याय की व्यवस्था अदालतों की एक श्रेणी द्वारा की जाती थी जो ग्राम पंचायत से लेकर (काजी, अमीरे–दाद और मीर अदल के तहत्) परगना, सरकार और प्रांतीय अदालतों और अंततः मुख्य सदर व काजी और सबसे अंत में खुद सम्राट तक जाती थी। सल्तनत और मुगल दोनों के शासन में कोतवाल स्थानीय स्तर पर कानून का पालन करानेवाला था।

31.11 इक्ता, जाग़ीर और मनसब

सल्तनत में इक्ता और मुगलों के तहतजाग़ीर राजस्व एकत्र करनेवाले अधिकारियों के रूप में प्रसिद्ध हुए, जिसे राज्य की ओर से इक्तादार और जागीरदार अपना वेतन प्राप्त करने के उद्देश्य से वसूल करते थे। किंतु उनके न्यायिक अधिकार सम्राट की खुशी पर निर्भर थे। मुक्ती या इक्तादारों से कानून और व्यवस्था बनाए रखने और अपनी इक्ता से राजस्व एकत्र करने के अलावा जरूरत के समय सुल्तानों को सैनिक सहायता प्रदान करने की अपेक्षा की जाती थी। राजस्व का यहाँ आबंटन आमतौर पर आनुवंशिक नहीं होता था और हस्तांतरणीय था। इसी प्रकार मनसब व्यवस्था मुगल साम्राज्य की सार्वजनिक सेवा के संगठन पर आधारित थी। यह न तो आनुवंशिक थी, न ही पदानुक्रमिक। मनसब का शाब्दिक अर्थ है दर्जा या पद, जिसे अधिकारी के व्यक्तिगत गुणों और हैसियत (जात) तथा उसके द्वारा रखे जानेवाले दस्ते (सवार) के मुताबिक तय किया जाता था। आमतौर पर मनसबदारों को एक इलाका दे दिया जाता था, जिसे जागीर कहते थे, जिसका अनुमानित राजस्व (जमा) उसके जात और सवार दोनों मनसबों के वेतन के बराबर होता था, हालांकि कुछ मनसबदारों को शाही खजाने से नकद भुगतान भी किया जाता था।

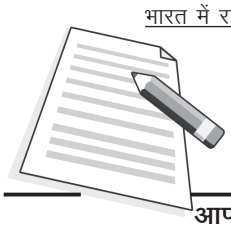

आपकी टिप्पणियाँ

31.12 कर-व्यवस्था

सल्तनत की कर–प्रणाली में ख़राज (कुल उपज के छठे भाग से लेकर एक तिहाई तक), जज़िया (आजीविका के स्वतंत्र साधन रखनेवाले वयस्क गैर–मुस्लिम पुरुषों पर सैनिक सेवा के बदले लगाया जानेवाला कर) और जक़ात (परोपकार के उद्देश्य से धनी मुस्लिमों से वसूला जानेवाला कर) जैसे कर और खम या गनीना (युद्ध में की गई लूट) और अन्य परिवहन और चुंगी शुल्क और साथ में प्राक तिक संसाधन आय के मुख्य साधन थे। चौधरी मुकद्दम और खूत गांव के राजस्व संग्रहकर्ता थे, जो आमिलों, शिकदारों और सूबे के मुक्तियों के अधीन काम करते थे। खालिस भूमि का राजस्व केवल सुल्तान के खजाने के लिए सुरक्षित था। मुगलों ने इस व्यवस्था में सुधार किया, विशेषकर भूमि राजस्व के क्षेत्र में। शेरशाह सूरी द्वारा लागू की गई माप की प्रणाली जब्त अकबर द्वारा अपनाई और सुधारी गई। राजस्व–निपटान की अंतिम पद्धति आइने–दहसाला किसी खेत विशेष के पिछले दस वर्षों की सालाना उपज के औसत पर आधारित थी। भूमि मापने के एक नए गज गजे–इलाही से भूमि–सर्वेक्षण में एकरूपता आई। भूमि की उत्पादकता, फसल का स्वरूप, कीमतें और सिंचाई–सुविधाएं सरकार की राजस्व की मांग का नकद मूल्य निश्चित करने के अन्य प्रमुख कारक थे। लगान चुकाने का विकल्प विभिन्न प्रणालियों के जरिये कार्यान्वित किया जा सकता था। भूमि का स्वामित्व सदैव किसान के पास रहाता था।

31.13 सेना

सल्तनत और मुगल राज्य दोनों सेना पर आश्रित थे, जिसका मुख्य बल घुड़सवार सेना थी। सुल्तानों के तहतअरीज–ए–मुसालिक और मुगल सम्राटों के तहतमीर बख्शी सेना के प्रभारी थे, किंतु शासक खुद सारी सशस्त्र सेनाओं पर नियंत्रण रखता था। एक नियिमत स्थायी सेना रखनेवाला बलबन पहला शासक था। अलाउद्दीन खिलजी ने इस व्यवस्था को और मजबूत किया, जिसने घोड़ों को दागकर चिह्नित करने की प्रणाली लागू की। दिल्ली सल्तनत में शाही घुड़सवार सेना हशम–ए–कल्ब या अफ्वाज–ए–कल्ब कहलाती थी। हशम–ए–अत्राज प्रांतीय स्तर पर पदस्थ घुड़सवार सेना थी। यहाँ सेना दशमलव प्रणाली के आधार पर संगठित की जाती थी। मुगल सेना ऊपर वर्णित मनसब प्रणाली के आधार पर संगठित की जाती थी। अहदी सीधे सम्राट के नियंत्रण के अधीन शाही घुड़सवार सैनिक होते थे। बाबर के आगमन के बाद भारत में तोपखाने तेजी से विकसित हुए। घेरेबंदी अर्थात् किसी किलेबंद जगह को घेरकर उस पर हमला करने की प्रक्रिया के अलावा किलों पर भारी बंदूकें जड़ी रहाती थीं। विशाल संख्या में होने के बावजूद पैदल सेना में लड़ाकू और गैर–लड़ाकू दोनों वर्ग शामिल रहाते थे। लड़ाकू लोग मुख्यतः तोड़ेदार बंदूकों वाले लोग होते थे, जिन्हें बंदूकची कहा जाता था। अकबर के समय तक पैदल सेना में तोड़ेदार बंदूकों वाला दस्ता भी शामिल किया जाने लगा था। दिल्ली के सुल्तान और मुगल दोनों युद्ध के मैदानों में हाथियों का इस्तेमाल करते थे। नौसेना सदैव भारतीय शासकों का कमजोर पहलू बनी रही।

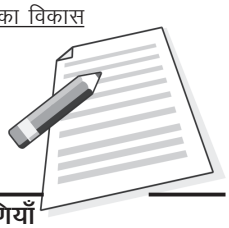

आपकी टिप्पणियाँ

31.14 मुद्रा-प्रणाली

सुल्तानों के शासन में इल्तुतमिश से लेकर आगे तक 175 ग्रेन का चांदी का टका मानक सिक्का बना रहा मुद्रा प्रणाली हालांकि द्विधातुक थी और तांबे का एक समानांतर सिक्का भी प्रचलन में था, जिसकी मूलभूत इकाई जीतल थी। चौदहवीं शताब्दी में 48 या 50 जीतल एक टके के बराबर माने जाते थे। सुल्तानों ने सोने–चांदी के सिक्के भी जारी किए, और सोने के निर्गम भी बरकरार रहो। चांदी का सिक्का कभी जारी न करनेवाले लोधियों ने 145 ग्रेन का एक भारी सोने का सिक्का जारी किया, जिसे बहलोली कहा जाता था। चांदी का रुपया जारी कर और टके को पूर्णतः तांबे का सिक्का बनाकर शेरशाह सूरी ने द्विधातुक प्रणाली स्थापित की। अकबर से लेकर मुगलों ने यह व्यवस्था जारी रखी, उनका रूपए का वजन 178 ग्रेन (औरंगजेब के जमाने में 180) होता था जिसमें मिश्रधातु 4 प्रतिशत से ज्यादा कभी नहीं हुई। तांबे में उन्होंने 323 ग्रेन वजन के दाम ढाले, जो मूलतः शेरशाह के टके के आधे होते थे। अकबर के अंतिम वर्षों में एक रूपया 40 दामों का होता था, जो आगे चलकर रुपए का कागजी मूल्य बन गया। असल में रुपए का तांबागत मूल्य सत्रहवीं शताब्दी में घटता गया। मुगलों ने भी सोने के सिक्के जारी किए, जिन्हें मोहर या अशर्फी कह जाता था, पर वे आमतौर पर बाजार में इस्तेमाल नहीं किए जाते थे। मुगलों की सिक्का–ढलाई में बहुत धात्विक शुद्धता और एकरूपता रहाती थी। ढलाई इस अर्थ में 'निःशुल्क' थी कि कोई भी सोना–चांदी टकसाल में ले जाकर मामूली शुल्क पर सिक्के ढलवा सकता था।

पाठगत प्रश्न 31.3

कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिएः

1. सम्राट ने नए तत्त्वों को अपनी सेवा में आने के लिए प्रोत्साहित किया और _____ मुगल अभिजात वर्ग का एक महत्त्वपूर्ण भाग बनने के लिए आ गए। (अफगानी, ईरानी, तुर्क)

2. सल्तनत में सरकार के सारे मामले देखने के लिए सुल्तान के ठीक बाद _____ का कार्यालय था। (मुख्य सदर, मुख्य न्यायाधीश, वजीर)

3. मुगल काल में _____ राजस्व एकत्र करने वाले दफ्तर के रूप में विकसित हो गया जो उसे राज्य की ओर से वसूल करता था। (मसब, सदर, जागीर)

4. सुल्तानों के समय इल्तुतमिश और उसके बाद _____ ग्रेन वजन का चांदी का टका (सिक्का) मानक सिक्का था। (175, 200, 225)

इस प्रकार मध्यकालीन राज्य का विकास विजयों और समन्वय के साथ एक लगातार बढ़नेवाली प्रक्रिया थी। शासन की कला में कुछ मध्य एशियाई संस्थाएं शुरू की गईं, पर साथ ही पिछली प्रथाओं से भी ज्यादा छेड़छाड़ नहीं की गई। जहाँ तक प्रशासन के संगठन और शासक वर्ग का संबंध है, यह कोई अखंड ढांचा नही था। सत्ता के एकमात्र

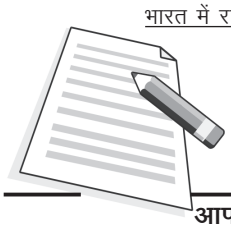

आपकी टिप्पणियाँ

स्रोत के रूप में हर राजा को अपने वंश का स्थायित्व और द ढ़ता सुनिश्चित करने के लिए बदलते समीकरणों और हिताधिकारी समूहों में संतुलन स्थापित करना पड़ता था। लेकिन एक मिश्रित संस्क ति के विश्वासों का हमेशा ध्यान रखा जाता था।

आपने क्या सीखा

गुप्त राज्य के पतन के बाद भारतीय राज्यतंत्र ने विकेंद्रीकरण और विभिन्न क्षेत्रीय राज्यों का उदय देखा तेरहावीं शताब्दी में उत्तर भारत में एक नए प्रकार के राजवंशीय क्षेत्र का उदय हुआ। दिल्ली सल्तनत की उत्पत्ति मुहम्मद गोरी के विजयों से हुई है, जिसने 1151 में गजनी को हटाया। उसकी सेनाओं ने मुलतान, सिंध, पेशावर और लाहौर को जीता। बाद में इल्तुतमिश को उत्तर भारत में तुर्की विजयों का वास्तविक नेत त्वकर्ता माना गया।

1246 में राजनीतिक स्थिति में बदलाव आया जब गयासुद्दीन बलबन ने काफी ताकत हासिल कर ली थी। पहले सुल्तान का नायब (उप) और बाद में खुद सुल्तान (शासन 1266–87) रहा बलबन अपने समय की सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक हस्ती था। 1296 में जलालुद्दीन खिलजी की उसके के महत्त्वाकांक्षी भतीजे और उत्तराधिकारी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा हत्या कर दी गई। अलाउद्दीन खिलजी के शासन–काल (1296–1316) में सल्तनत ने संक्षेप में साम्राज्य का स्वरूप ग्रहण कर लिया। किंतु अलाउद्दीन की म त्यु के पांच वर्षों के भीतर खिलजियों ने अपनी सत्ता खो दी।

गयासुद्दीन तुगलक (1320–25) और मुहम्मद बिन तुगलक ने सल्तनत के उच्च बिंदु को चिह्नित किया और पूरे भारत पर राज करना चाहा यह सतत केंद्रीकरण और विस्तार का समय था।

1526 में मध्य एशिया से आए बाबर ने भारत में मुगल वंश की स्थापना की। उसकी दिल्ली और गंगा घाटी और बाद में पंजाब से बंगाल तक की जीतों ने उसे पादशाह की फारसी पदवी ग्रहण करने का हकदार बना दिया। उसका बेटा हुमायूँ शेरशाह से हार गया और अफगानिस्तान लौट गया। शेरशाह की म त्यु के बाद 1555 में हुमायूँ ने दिल्ली को जीत लिया और दुर्घटनावश उसकी म त्यु हो गई। उसका तेरहा वर्षीय बेटा अकबर गद्दी पर बैठा और उसने अपने संरक्षक बैरम खाँ के मार्गदर्शन में लाहौर, दिल्ली, आगरा और जौनपुर के फौजी किलों वाले शहर जीते। अकबर ने 1556–1605 तक राज किया। उसका अधिकार–क्षेत्र काबुल, कश्मीर, पंजाब से गुजरात, बंगाल और असम तक फैला था। उसका बेटा जहाँगीर (1605–1627), पोता शाहजहाँ (1627–1658) और परपोता औरंगजेब (1658–1707) उसके उत्तराधिकारी थे। अपनी चरम अवस्था में मुगल साम्राज्य का भारतीय इतिहास में संसाधनों पर अभूतपूर्व अधिकार था।

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियां इस उपमहाद्वीप में यूरोपीय और गैर–यूरोपीय व्यापारिक संगठनों की स्थापना और विस्तार लेकर आई, मुख्य रूप से विदेश में मांग वाली भारतीय वस्तुओं की खरीद के लिए।

इस पाठ में आपने मध्यकालीन राज्य के स्वरूप, राजत्व, शाही दरबार और अभिजात वर्ग के बारे में भी जाना। इसके अलावा आपने प्रांतीय प्रशासन, कर लेने की प्रक्रिया, मध्यकालीन सेना और मुद्रा–प्रणाली के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

पाठांत प्रश्न

1. मुहम्मद गोरी की भूमिका का संक्षेप में वर्णन किजिए?
2. बलबन और खिलजी के युग की मुख्य विशेषताओं का उल्लेख किजिए?
3. "मुहम्मद बिन तुगलक के शासन ने सल्तनत के उत्थान और उसके पतन की शुरूआत दोनों को चिह्नित किया।" टिप्पणी किजिए?
4. सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों के दौरान मुगलों के शासन का मूल्यांकन किजिए?
5. मध्यकालीन राज्य के स्वरूप की जांच किजिए?
6. राजा के व्यक्तित्त्व का क्या अर्थ है?
7. प्रांतीय प्रशासन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1

1. 1186
2. 1175, 1182 और 1186
3. उत्तर भारत
4. 1290
5. 1296

31.2 रिक्त स्थान भरो

1. तैमूर, चंगेज खान
2. 1555
3. 1707, सक्षम, केंद्रीक त
4. मुगल, शरियत

31.3 कोष्ठक ( ) में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरोः

1. ईरानी

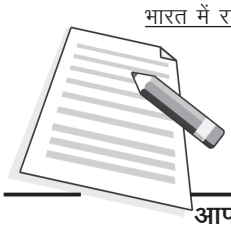

आपकी टिप्पणियाँ

2. वजीर
3. जागीर
4. 175

पाठांत प्रश्नों के लिए संकेत

1. अनुच्छेद 31.2 देखें
2. अनुच्छेद 31.2 देखें
3. अनुच्छेद 31.2 देखें
4. अनुच्छेद 31.3 देखें
5. अनुच्छेद 31.4 देखें
6. अनुच्छेद 31.5 देखें
7. अनुच्छेद 31.10 देखें